मलेरिया का इलाज और बचाव

वर्ष 2014

मितानिन के लिए संदर्शिका

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन
राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम राज्य इकाई छत्तीसगढ़
राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

परिचय :-

मलेरिया के विषय में हमने पहले भी सीखा है। हमारे प्रदेश के लिए मलेरिया अभी भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इसलिए हम मलेरिया पर अपनी जानकारी और काम को और मजबूत करेंगे।

मलेरिया क्या है :-

मलेरिया एक बीमारी है जो कि परजीवी से होता है, जिसे प्लाजमोडियम कहते हैं। मलेरिया एक व्यक्ति से और व्यक्तियों में फैलने वाली बीमारी है। मलेरिया एक विशेष प्रकार के परजीवी से होता है, जो मादा ''एनाफिलिज'' मच्छर के काटने पर हमारे शरीर में प्रवेश कर जाता है। मलेरिया दो प्रकार के होते हैं – पी.वी. और पी.एफ.। पी.एफ. ज्यादा खतरनाक होता है इसके कारण दिमाग, गुर्दे एवं फेफड़े को नुकसान हो सकता है। मलेरिया छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है।

मलेरिया कैसे फैलता है :-

अगर एक मच्छर संक्रमित व्यक्ति को काट लेता है तो मलेरिया परजीवी, जो व्यक्ति के खून में है, मच्छर के पेट में प्रवेश कर जाता है। यहां परजीवी ज्यादा संख्या में बढ़कर मच्छर के डंक के पास पहुंच जाता है। जब मच्छर एक स्वस्थ व्यक्ति को काट लेता है तो परजीवी स्वस्थ व्यक्ति के खून में प्रवेश कर जाता है और उसी में बढ़ना शुरू कर देता है। इस तरह मच्छर मलेरिया के डाकिया का काम करता है और एक आदमी से दूसरे तक इसको फैलाता है।

सबसे ज्यादा खतरा किसको होता है :-

गर्भवती और 0 से 5 वर्ष के बच्चों को मलेरिया से ज्यादा खतरा होता है। कुपोषित बच्चों को और भी ज्यादा खतरा होता है।

मलेरिया के लक्षण :-

- ❖ अचानक ठंड लग कर बुखार आना, पसीना, सिरदर्द, बदन दर्द होना
- ❖ इससे शरीर में ठिठुरन और जबरदस्त कपकपी के साथ तेज बुखार आ जाता है
- ❖ सामान्यतः बुखार एक–एक दिन छोड़कर आता है

- ❖ मरीज में बहुत कमजोरी आ जाती है
- ❖ मरीज को बुखार के साथ–साथ उल्टियां भी हो सकती है
- ❖ मलेरिया के मौसम (जुलाई से दिसम्बर माह) में दस्त एवं पीलिया के सभी मरीजों की भी मलेरिया का पता लगाने के लिए आर.डी. टेस्ट से जांच करनी चाहिए

आर.डी. टेस्ट से मलेरिया की जांच :-

- ❖ आर.डी. टेस्ट से हर बुखार के मरीज की जाँच की जानी है। इससे मितानिन वहीं पर जाँच करके मलेरिया का पता लगा सकती है।
- ❖ मितानिन को आर.डी. टेस्ट के साथ–साथ स्लाइड भी बनाना है। यदि आर.डी. टेस्ट से जांच करने पर निगेटिव है, तो स्लाइड को पास के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में जांच के लिए अवश्य भेजना चाहिए।
- ❖ आर.डी. टेस्ट को ज्यादा गर्मी से बचाएं। इसे 40° सेंटीग्रेड से कम तापमान में रखें।

बाइवेलेंट आर.डी. (RD) टेस्ट में यह सामान होता है

1. टेस्ट किट

2. सुई (लेंसेट)

3. स्प्रिट स्वाब (रूई का टुकड़ा)

4. प्लास्टिक की पतली पाइप

5. बफर घोल

जांच का तरीका

❖ सभी सामान को एक जगह पर रख लें

❖ स्प्रिट स्वाब (रूई का टुकड़ा) की सहायता से बाएं हाथ की छोटी उंगली की पहले वाली उंगली को साफ करें

❖ सुई (लेंसेट) को उंगली पर चुभाएं

❖ उंगली से एक बूंद खून बह जाने दें

❖ फिर उंगली में जो खून बह रहा हो उसमें प्लास्टिक की पतली पाइप को तिरछा करके लगायें जिससे खून पाईप के अंदर आ जायेगा

❖ पतली पाईप की सहायता से जांच पट्टी पर खून को तीर वाले निशान की ओर डालें

❖ टेस्ट किट में बने खण्ड में दो बूंद बफर घोल को डालें

❖ 15 से 20 मिनट के बीच में देखें। 30 मिनट के बाद उसे ना देखें, इसके बाद हो सकता है गलत परिणाम दिखे। इसलिए महत्वपूर्ण है कि बफर डालने के 15 से 20 मिनट के बीच में ही इसे देखना है

जांच का परिणाम देखना

1. **जांच पट्टी पर कोई लाल लकीर का ना होना** :– मतलब जांच पट्टी ठीक से काम नहीं कर रही है। ऐसी जांच पट्टी को फेंक देवें तथा दूसरी जांच पट्टी का उपयोग करें

2. **C निशान में लकीर ना होना** :– यदि C में लकीर नहीं आती है और अन्य जगह पर आती है, तब भी आर.डी. टेस्ट दोबारा करना है

3. **सिर्फ एक लाल लकीर का होना** :– यदि एक लाल लकीर (C निशान में) दिखाई देती है, इसका मतलब रोगी को किसी भी प्रकार का मलेरिया नहीं है

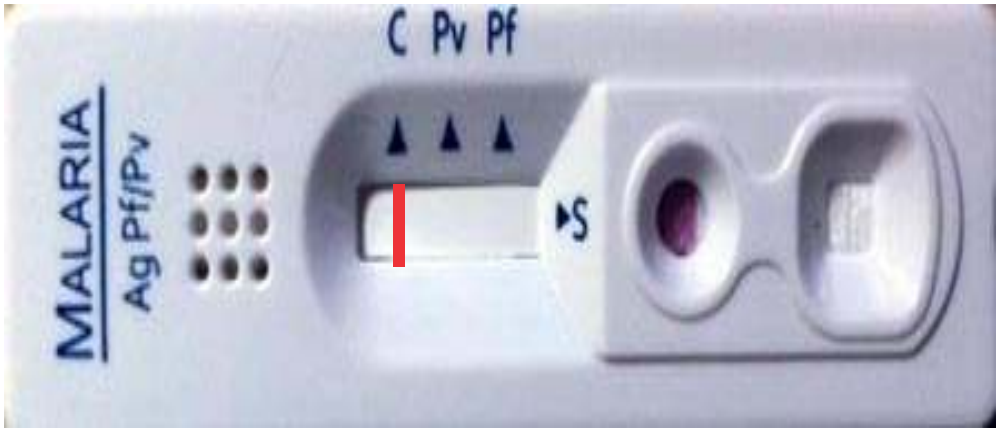

4. यदि लाल लकीर C निशान और पी.वी. पर दिखाई देती है तो उसे पी.वी. मलेरिया है

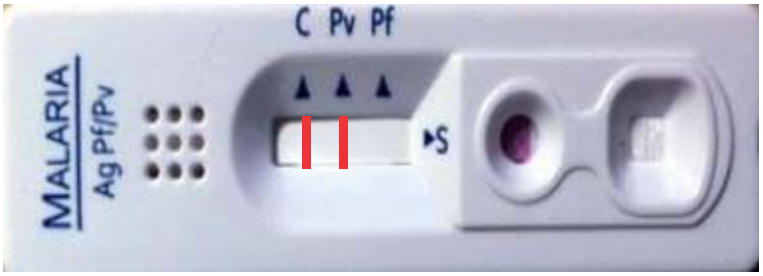

5. यदि लाल लकीर C निशान और पी.एफ. पर दिखाई देती है तो उसे पी.एफ. मलेरिया है

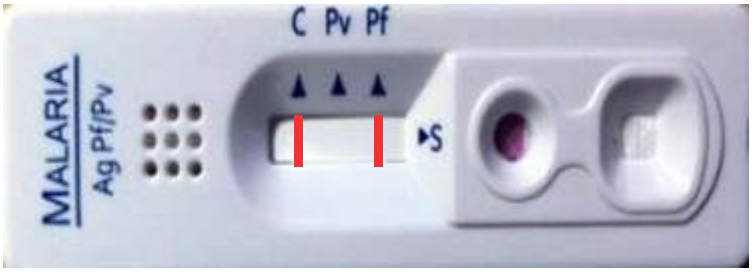

6. यदि लाल लकीर C निशान, पी.वी. और पी.एफ. तीनों पर दिखाई देती है तो उसे पी.एफ. मलेरिया मानना है

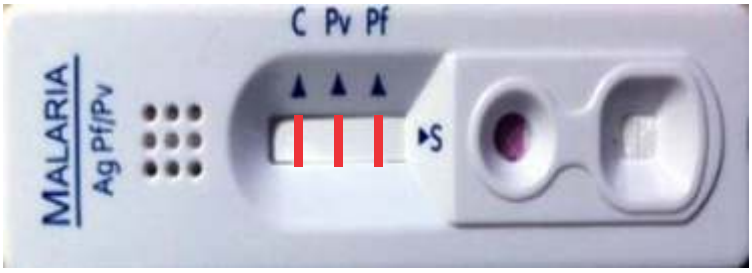

इस्तेमाल किये जा चुके आर.डी. टेस्ट का निपटारा :-

परिणाम नोट करने के बाद आर.डी. टेस्ट को गड्ढे में डालकर पाट दें।

रक्त पट्टी से जांच करना

मलेरिया जाँच हेतु रक्त पट्टी कैसे बनायें ?

जरूरी सामान : रूई स्प्रीट, सुई या लेन्सेट, कांच की पट्टियाँ।

(अ) खून निकालने की विधि :

1. जिस उंगली से खून निकालना हो उसे ठीक से पकड़ें रूई में स्प्रीट लगाकर उंगली के ऊपरी हिस्से को साफ करें।

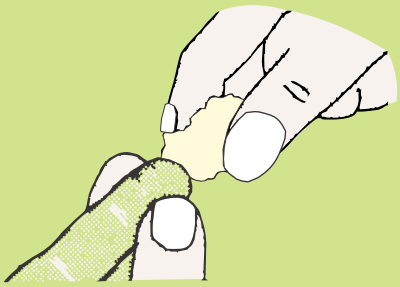

2. रूई के टुकड़े से स्प्रीट को सुखाएँ।

3. उंगली के ऊपरी हिस्से में सुई या लेन्सेट चुभाएँ। (प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग–अलग सुई/लेन्सेट का उपयोग करें) खून को ठीक से आने दें, पहली बूंद को नीचे गिरा दें।

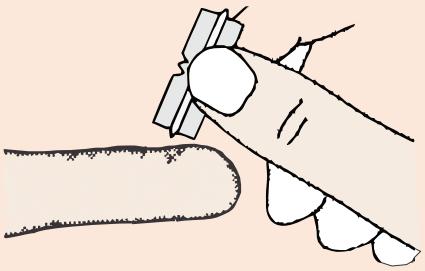

(ब) पट्टी बनाने के विधि :

1. कांच की पट्टी के किनारे तीन बूंद पास–पास में लगा दें और दूसरी पट्टी से उसे मिलाकर एक बड़ी बिंदी सा बना दें।

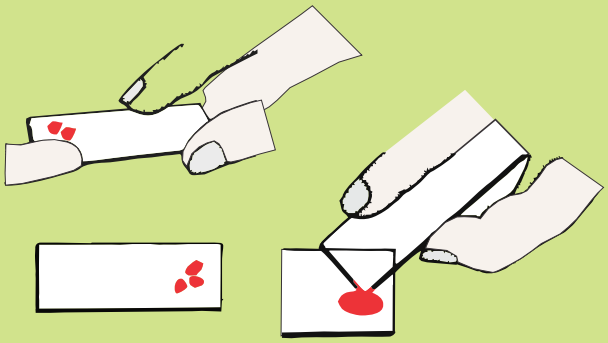

2. फिर पट्टी के बीच में एक बूंद गिरा दें। दूसरी पट्टी से खून बिंदी के दूसरी तरफ पूरा फैला दें। इसे सूखने दें।

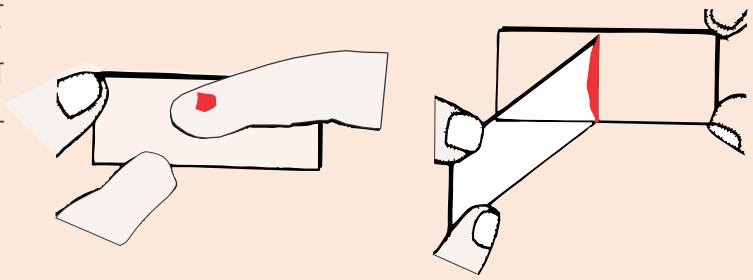

3. खून फैलाने के लिए पट्टी को न हिलाएँ या हाथ से न ठोकें। पट्टी से ही उसे फैलाएँ। पट्टी अच्छे से सूख जाए तब कागज से उसे लपेट कर और कागज में मरीज का नाम, गांव का नाम लिखें और जांच के लिए भेजें।

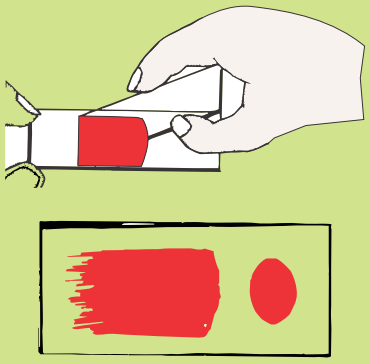

पी.एफ. मलेरिया का ए.सी.टी. दवा से इलाज :-

पी.एफ. मलेरिया का इलाज ए.सी.टी. दवा से करना है।

पी.एफ. मलेरिया के लिए ए.सी.टी. की खुराक उम्र अनुसार :-

उम्र	प्रथम दिन		दूसरा दिन	तीसरा दिन
	आरटीसुनेट गोली	एस.पी.	आरटीसुनेट	आरटीसुनेट (50 मिली ग्राम)
1 वर्ष से कम (छोटा गुलाबी पत्ता)	1 (25 मिली ग्राम)	1 (250+15 मिली ग्राम)	1 (25 मिली ग्राम)	1 (25 मिली ग्राम)
1–4 वर्ष (पीला पत्ता)	1 (50 मिली ग्राम)	1 (500+25 मिली ग्राम)	1 (50 मिली ग्राम)	1 (50 मिली ग्राम)
5–8 वर्ष (हरा पत्ता)	1 (100 मिली ग्राम)	1 (750+37.5 मिली ग्राम)	1 (100 मिली ग्राम)	1 (100 मिली ग्राम)
9–14 वर्ष (बड़ा गुलाबी/ लाल पत्ता)	1 (150 मिली ग्राम)	2 (500+25 मिली ग्राम)	1 (150 मिली ग्राम)	1 (150 मिली ग्राम)
15 वर्ष से अधिक (सफेद पत्ता)	1 (200 मिली ग्राम)	3 (500+25 मिली ग्राम)	1 (200 मिली ग्राम)	1 (200 मिली ग्राम)
गर्भवती	सभी गर्भवती महिलाओं को अनिवार्यतः अस्पताल रेफर करें। यदि रेफर बिल्कुल भी संभव न हो तो सिर्फ दूसरे–तीसरे तिमाही में ए.सी.टी. दे सकते हैं। परंतु 24 घंटे बुखार नहीं उतरे तो रेफर करें। गर्भवती को पहली तिमाही में ए.सी.टी. दवा न दें। गर्भवती को कभी भी प्राइमाक्वीन नहीं देना है।			

एक दिन प्राइमाक्वीन देने से बीमारी दूसरे व्यक्तियों में फैलने को कम किया जा सकता है।

प्राइमाक्वीन की मात्रा उम्र अनुसार :-

15 वर्ष से अधिक – 45mg प्राइमाक्वीन

9 से 14 वर्ष – 30mg प्राइमाक्वीन

5 से 8 वर्ष – 15mg प्राइमाक्वीन

1 से 4 वर्ष – 7.5mg प्राइमाक्वीन

0 से 1 वर्ष – प्राइमाक्वीन नहीं देना है

गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को – प्राइमाक्वीन नहीं देना है

प्राइमाक्वीन गोली की उम्र अनुसार मात्रा ए.एन.एम. से पूछें

पी.वी. मलेरिया का इलाज : -

उम्र के अनुसार तीन दिन तक क्लोरोक्विन दवा की पूरी खुराक दें

उम्र	क्लोरोक्विन गोली (150 मिली ग्राम आधार)		
	प्रथम दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन
1 वर्ष से कम	½	½	¼
1–4 वर्ष	1	1	½
5–8 वर्ष	2	2	1
9–14 वर्ष	3	3	1 ½
15 वर्ष से अधिक	4	4	2
गर्भवती	4	4	2

पी.वी. मरीजों को 14 दिन प्राइमाक्वीन देने से बीमारी दूसरे व्यक्तियों में फैलने को कम किया जा सकता है।

प्राइमाक्वीन की मात्रा उम्र अनुसार :-

15 वर्ष से अधिक	–	15mg प्राइमाक्वीन
9 से 14 वर्ष	–	10mg प्राइमाक्वीन
5 से 8 वर्ष	–	5mg प्राइमाक्वीन
1 से 4 वर्ष	–	2.5mg प्राइमाक्वीन
0 से 1 वर्ष	–	प्राइमाक्वीन नहीं देना है
गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को	–	प्राइमाक्वीन नहीं देना है

प्राइमाक्वीन गोली की उम्र अनुसार मात्रा ए.एन.एम. से पूछें

ध्यान रखें :–

- ❖ क्लोरोक्वीन गोली खाली पेट न खिलाएं। मरीज को पानी पिलाना चाहिए और खाना खिलाना चाहिए
- ❖ बुखार कम करने के लिए पैरासिटामाल गोली दें

ए.सी.टी. दवा का पत्ता उम्र अनुसार

1. सफेद पत्ता (15 वर्ष से अधिक के लिए) -

2. बड़ा गुलाबी/ लाल पत्ता (9 से 14 वर्ष के लिए) -

3. हरा पत्ता (5 से 8 वर्ष के लिए) -

4. पीला पत्ता (1 से 4 वर्ष के लिए) -

5. छोटा गुलाबी पत्ता (1 वर्ष से कम के लिए) -

मलेरिया की दवा देते समय मितानिन के लिए ध्यान रखने वाली बातें : -

1. मितानिन मरीज को तीनों दिन अपने सामने दवा खिलायेगी
2. दवा खिलाने के 15 मिनट बाद तक इंतजार कर देखरेख करेगी। यदि मरीज को उल्टी हो तो दोबारा दवा खिलायेगी। उसके बाद भी उल्टी हो तो मरीज को अस्पताल रेफर करेगी
3. यदि पहले–दूसरे दिन दवा खाने के बाद मरीज का बुखार ठीक हो जाता है, तब भी 3 दिन तक पूरी दवा खिलायेगी। अधूरी दवा खाना मरीज के लिए हानिकारक होता है

गर्भवती महिलाओं का मलेरिया से बचाव : -

- ❖ प्रत्येक प्रसव पूर्व जांच के समय सभी गर्भवती महिलाओं का मलेरिया जांच करना आवश्यक है, चाहे उसमें लक्षण हों या ना हों। इसके लिए हर गर्भवती महिला की हर तिमाही में आर.डी. टेस्ट से जांच की जानी है।
- ❖ मितानिन द्वारा 15–15 दिन में हर गर्भवती से भेंट कर बुखार तथा अन्य लक्षणों का पता लगाया जाना चाहिए। यदि लक्षण मिलें तो आर.डी. टेस्ट से जांच की जानी चाहिए।
- ❖ आर.डी. जांच में गर्भवती को मलेरिया दिखे तो गर्भवती महिला को अस्पताल रेफर करें।

❖ मलेरिया से पीड़ित गर्भवती को रेफर करना संभव न हो तो निम्नानुसार इलाज करें –

☞ पी.वी. मलेरिया के लिए क्लोरोक्वीन से इलाज

☞ दूसरी या तीसरी तिमाही में पी.एफ. मलेरिया के लिए ए.सी.टी. से इलाज

❖ पहली तिमाही में गर्भवती को पी.एफ. मलेरिया हो तो अस्पताल रेफर करना ही पड़ेगा। पहली तिमाही में गर्भवती को ए.सी.टी. दवा नहीं दिया जाना है।

❖ गर्भवती महिला को कभी भी प्राइमाक्वीन नहीं देना है।

मलेरिया के मरीज को रेफर कब करें :-

1. यदि ए.सी.टी. दवा खाने के 24 घंटे बाद भी किसी मरीज का बुखार ठीक नहीं हुआ हो तो, मरीज को अस्पताल रेफर करें।
2. यदि गंभीर मलेरिया के लक्षण मिलें तो मरीज को ए.सी.टी. का पहला डोज देकर तुरंत अस्पताल भेजें। गर्भवती मरीज को प्रथम तिमाही में ए.सी.टी. नहीं देना है।
3. मलेरिया से पीड़ित एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को भी रेफर करना चाहिए। पहली तिमाही में गर्भवती महिला को रेफर करना अनिवार्य है।

गंभीर मलेरिया के लक्षण :-

गंभीर मलेरिया के लक्षण देखकर मरीज को अस्पताल 108 में रेफर करना है। रेफर करने से पहले जो मरीज मुख से दवा ले सकते हैं उन्हें ए.सी.टी. का पहला डोज देना है, इससे मरीज की जान बचाने में मदद मिल सकती है।

❖ मरीज तेज बुखार के कारण बड़बड़ा रहा है

❖ मरीज को 6 घंटे से पेशाब नहीं हुआ है

❖ मरीज बेहोश हो गया है

❖ मरीज को झटके आ रहे हैं

❖ मरीज में गंभीर खून की कमी है

❖ बुखार के साथ–साथ पीलिया के लक्षण दिख रहे हैं

❖ मरीज को काला पेशाब हो रहा है

❖ शरीर में लाल रंग के बहुत से दाने दिख रहे हैं

ऊपर लिखे मरीजों को कहां भेजना है :-

पास के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भेजें जहां मलेरिया का इलाज उपलब्ध है

ऊपर लिखे मरीजों को अस्पताल कैसे भेजें :-

108 गाड़ी बुलाकर भेजें। गर्भवती एवं एक वर्ष तक के बच्चों को 102 गाड़ी से भी भेजा जा सकता है

मरीज को घर पर सुई या बॉटल नहीं लगवाने की सलाह दें

मलेरिया से बचाव :-

1. **मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए :–**

- सामान्य मच्छरदानियों को डेल्टामेथरिन से उपचारित करना चाहिए। डेल्टामेथरिन का असर छः महिने तक रहता है इसलिए छः महिने के बाद दोबारा मच्छरदानी का उपचार करना चाहिए
- एक मच्छरदानी को (नॉयलोन, पॉलिस्टर या सूती) उपचारित करने के लिए आधा लीटर पानी की आवश्यकता होती है। इसमें 10 से 15 मिली डेल्टामेथरिन की जरूरत होती है। मच्छरदानी को 10 मिनट तक पानी और डेल्टामेथरिन से बनाये गये घोल में रहने देना चाहिए। इसके बाद मच्छरदानी को छाया वाली जगह में सुखाना चाहिए
- ऐसे इलाके जहां मच्छर पूरे साल होते हैं वहां मच्छरदानी को साल में दो बार उपचारित करना चाहिए
- कीटनाशक दवा उपचारित मच्छरदानियों का निचले हिस्से को गद्दे के नीचे अच्छी तरह से दबाएं ताकि मच्छरदानी के अंदर मच्छर प्रवेश न कर सके
- सभी व्यक्तियों को और खासकर गर्भवती महिला और 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कीटनाशक उपचारित मच्छरदानी लगाकर सोना चाहिए

2. **कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव करना चाहिए :–**

- कीटनाशक दवा का छिड़काव घर के अंदर की सभी दीवारों, छतों, दरवाजे के पीछे, घर के आसपास कम रौशनी वाले स्थानों पर जरूर कराना चाहिए। जानवरों के रहने के स्थानों में छिड़काव नहीं कराना चाहिए। छिड़काव के बाद मलेरिया से संक्रमित मच्छर घर की दीवारों पर अथवा अन्य जगहों पर बैठते हैं तो वे कीटनाशक के सम्पर्क में आते हैं, जिससे कीटनाशक मच्छर के शरीर में प्रवेश करते हैं और मच्छर मर जाते हैं।

कीटनाशक का नाम	10 लीटर पानी में नीचे दिये गये कीटनाशक की मात्रा का घोल बनावें
डी.डी.टी. 50%	1 किग्रा.
डेल्टा मेथ्रिन 2.5%	400 ग्राम
अल्फा सायपर मेथ्रिन 5%	250 ग्राम
सिफलूथ्रिन 10%	125 ग्राम
मेलाथियान 25%	2 किग्रा.

कीटनाशक का घोल निम्न चरणों में बनाया जाना चाहिए :-

- कीटनाशक के चूर्ण का थोड़े पानी में पेस्ट बनायें
- बाकी पानी को धीरे–धीरे बाल्टी में डालते हुए पेस्ट में मिलाएं ताकि कीटनाशक ठीक तरह से पानी में घुल जाये
- कीटनाशक के घोल को एक कपड़े की सहायता से दूसरी बाल्टी में छान लें ताकि छिड़काव के दौरान पम्प की नोंक में कुछ ना फंसे
- छिड़काव करने वाले पम्प के पीपे को कीटनाशक का घोल भरने के लिए बाल्टी में डालें। एक व्यक्ति पम्प को चलाए तथा दूसरा व्यक्ति छिड़काव कार्य करेगा
- छिड़काव करने वाली छड़ को दीवार की तह से लगभग 45 सेमी. (18 इंच) दूर रखें। सामान रूप से छिड़काव करें
- 53 सेमी. (21 इंच) लम्बी, खड़ी (ऊपर से नीचे की तरफ) पट्टियां बनाते हुए छिड़काव करें
- एक के बाद दूसरी पट्टी का छिड़काव करते हुए लगभग 7.5 सेमी. (3 इंच) की जगह दोबारा शामिल करें
- किनारों पर छिड़काव नीचे से ऊपर की तरफ करें
- जमीन पर छिड़काव न करें
- छत तथा छज्जों पर अंदर की तरफ छिड़काव करें
- छिड़काव के पश्चात् दीवारों पर लिपाई–पोताई एवं छपाई न करवायें
- छिड़काव कार्य की पूर्व सूचना एक सप्ताह पूर्व लोगों को दी जानी है
- छिड़काव कार्य को सफल बनाने के लिए लोगों में जागरूकता फैलायें

3. नीम की पत्ती/तेल का धुंआ करना चाहिए

4. गड्ढों में तेल डालना अथवा उनको पाटना चाहिए

5. पूरे शरीर को ढक कर सोना चाहिए

6. तालाबों में गम्बूजिया मछली पालना चाहिए

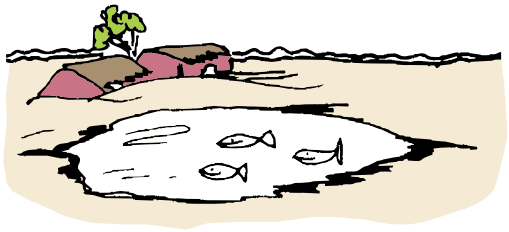

7. घर में कूलर, पुराने मटके, टायर आदि में पानी जमा नहीं होने देना चाहिए

मितानिन की भूमिका

1. सभी बुखार प्रकरणों की आर.डी. टेस्ट से जांच करना और स्लाइड बनाना
2. मलेरिया की दवा से इलाज करना, अपने सामने तीन दिन तक मरीज को पूरी दवा खिलाना तथा मलेरिया का पूरा इलाज हुआ है कि नहीं उसकी निगरानी करना
3. पारा की सभी गर्भवती महिलाओं की हर तीन माह में आर.डी. टेस्ट से जांच करना
4. मलेरिया से बचाव व मच्छरों को कम करने की कार्ययोजना बनाना
5. गंभीर मलेरिया के मरीजों की पहचान व रेफर करना
6. उप स्वास्थ्य केन्द्र में माह में एक बार निश्चित दिन में आयोजित संकुल बैठक में भाग लेना एवं मलेरिया संबंधी जानकारी को प्रपत्र में प्रस्तुत करना (क) मरीज की जानकारी (ख) दवाई की जानकारी

गंभीर मलेरिया के लक्षण का कोड नम्बर :-

कोड नम्बर – 1 मरीज बेहोश हो गया है

कोड नम्बर – 2 मरीज को झटके आ रहे हैं

कोड नम्बर – 3 मरीज में गंभीर खून की कमी है

कोड नम्बर – 4 6 घंटे से पेशाब नहीं हुआ है

कोड नम्बर – 5 बुखार के साथ–साथ पीलिया के लक्षण दिख रहे हैं

कोड नम्बर – 6 मरीज को काला पेशाब हो रहा है

कोड नम्बर – 7 मरीज बड़बड़ा रहा है

कोड नम्बर – 8 शरीर में लाल रंग के बहुत से दाने दिख रहे हैं

मलेरिया पर क्या-क्या जानकारी मितानिन को लिखकर रखना है

मरीज संबंधी जानकारी :-

1. बुखार अथवा मलेरिया के अन्य लक्षण वाले मरीज का नाम
2. उम्र
3. जांच का दिनांक
4. क्या आर.डी.टेस्ट से जांच किया ?
5. आर.डी.टेस्ट का परिणाम (पी.एफ. / पी.वी.)
6. क्या स्लाइड बनाकर अस्पताल भेजी गई ?
7. क्या स्लाइड जांच में मलेरिया निकला ? (पी.एफ. / पी.वी. / रिपोर्ट नहीं मिली)
8. कौन सी दवा दी गई ? (ए.सी.टी. / प्राइमाक्वीन / क्लोरोक्वीन)
9. क्या मरीज ने 3 दिन दवा ली ?
10. क्या मरीज 24 घण्टे में ठीक नहीं हुआ ?
11. क्या मरीज में गंभीर मलेरिया के लक्षण मिले ?
12. गंभीर मलेरिया के देखे गये लक्षण का कोड नम्बर लिखें
13. क्या मरीज को रेफर किया ?
14. कहां रेफर किया ?
15. क्या 108 अथवा 102 गाड़ी मिली ?
16. क्या मरीज ठीक हो गया है ?
17. क्या पिछले 1 माह में मरीज को दूसरी बार मलेरिया हुआ है ?
18. गर्भवती मलेरिया प्रकरण

दवा संबंधी जानकारी :-

मितानिन को आर.डी. टेस्ट, ए.सी.टी., प्राइमाक्वीन, क्लोरोक्वीन की जानकारी को नीचे लिखे अनुसार लिखकर रखना है।

1. माह की भाुरूआत में पहले से बची मात्रा
2. माह में प्राप्त मात्रा
3. माह में उपयोग की गई मात्रा
4. माह के अंत में बची मात्रा

मरीजों की जानकारी माह .... (मितानिन के लिए)

मितानिन का नाम .... पारा .... ग्राम .... पंचायत .... उप स्वास्थ्य केन्द्र ....

नोट—जहां लागू हो ○ के निशान को भरें

क्र.	बुखार अथवा मलेरिया के अन्य लक्षण वाले मरीज का नाम	उम्र	जांच का दिनांक	क्या आर.डी. टेस्ट से जांच किया	आर.डी. टेस्ट का परिणाम		क्या स्लाइड बनाकर अस्पताल भेजी गई	स्लाइड जांच में क्या निकला			कौन सी दवा दी गई			क्या मरीज ने 3 दिन दवा ली	क्या मरीज 24 घण्टे में ठीक नहीं हुआ	क्या मरीज में गंभीर मलेरिया के लक्षण मिले	गंभीर मलेरिया के देखे गये लक्षणों का कोड नम्बर लिखें	क्या मरीज को रेफर किया	कहां रेफर किया	क्या 108 या 102 गाड़ी मिली	क्या मरीज ठीक हो गया है	क्या पिछले 1 माह में मरीज को दूसरी बार मलेरिया हुआ है	गर्भवती मलेरिया प्रकरण
					पी. एफ.	पी. वी.		पी. एफ.	पी. वी.	रिपोर्ट नहीं मिली	ए. सी. टी.	प्राइमा क्वीन	क्लोरो क्वीन										
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○
				○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○		○		○	○	○	○

आर.डी.टेस्ट, ए.सी.टी., प्राइमाक्वीन, क्लोरोक्वीन की जानकारी माह ..... (मितानिन के लिए)

मितानिन का नाम ..... पारा ..... ग्राम ..... पंचायत ..... उप स्वास्थ्य केन्द्र .....

सामान	माह की शुरूआत में पहले से बची मात्रा	माह में प्राप्त मात्रा	माह में उपयोग की गयी मात्रा	माह के अंत में बची मात्रा
आर.डी. टेस्ट की संख्या				
ए.सी.टी. पत्ते की संख्या – 15 वर्ष से ऊपर के लिए				
ए.सी.टी. पत्ते की संख्या – 9–14 वर्ष के लिए				
ए.सी.टी. पत्ते की संख्या – 5–8 वर्ष के लिए				
ए.सी.टी. पत्ते की संख्या – 1–4 वर्ष के लिए				
ए.सी.टी. पत्ते की संख्या – 0–1 वर्ष के लिए				
प्राइमाक्वीन की गोली की संख्या				
क्लोरोक्वीन की गोली की संख्या				

संकुल बैठक का दिनांक .....

प्रथम संस्करण

अक्टूबर - 2014

परिकल्पना एवं निर्माण

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम राज्य इकाई छत्तीसगढ़

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

डिजाईन एवं ले-आऊट

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

आभार

एन.वी.बी.डी.सी.पी.

संचालनालय स्वास्थ्य सेवायें छत्तीसगढ़

जन स्वास्थ्य सहयोग गनियारी

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

बिजली ऑफिस चौक, कालीबाड़ी, रायपुर - 492001

दूरभाष :- 0771-2236175, 4247444

प्रतियां 83,000